संगोष्ठी की विषय वस्तु :

किसी भी भाषाई समाज में भाषा के दो अभिव्यक्त रूपों का प्रयोग सामाजिक संप्रेषण के लिए किया जाता है। यह संप्रेषण मौखिक और लिखित दो प्रकार का होता है। मौखिक संप्रेषण में सामान्य वार्तालाप की भूमिका प्रमुख होती है लेकिन लोक समाज अपने आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति मौखिक भाषा में ही करता है, जिसे हम लोक साहित्य कहते हैं। सामाजिक विकास के साथ ही साहित्य लेखन या सृजन की लिखित परंपरा का विकास हमें दिखाई देता है। भारत की प्रत्येक भाषा में मौखिक लोक साहित्य भी उपलब्ध है और लिखित साहित्य भी।

भाषा समाज की भावनाएँ विविधरूपी होती हैं। इस वैविध्य पर सामाजिक संरचना का गहरा प्रभाव पड़ता है। इसीलिए साहित्य और समाज के अंतर्संबंध भी गहरे होते हैं। इस दृष्टि से ही समाज साहित्य को प्रभावित करता है और साहित्य समाज को। इस मुद्दे पर आलोचना साहित्य में विषद चर्चा हमें मिलती है और परिणामतः **साहित्य का समाज शास्त्र** जैसी प्रखर आलोचना दृष्टि का सूत्रपात होता है। परिवर्तित होते हुए समाज का साहित्य पर कैसा प्रभाव पड़ा है इसकी पड़ताल साहित्य की युगीन परंपरा के आधार पर की जाती रही है। इसी आधार पर आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल के साहित्य के सामाजिक परिप्रेक्ष्य अथवा सामाजिक परिस्थितियों पर गहन विचार साहित्येतिहासकार और आलोचक करते रहे हैं।

समाज के साथ संस्कृति की संबद्धता अनिवार्य होती है। संस्कृति एक मूल्य की तरह समाज में प्रतिष्ठित रहती है और स्वभावतः जिसका प्रभाव साहित्य सृजन पर भी पड़ता है। इस प्रकार साहित्य, समाज और संस्कृति परस्पर एक दूसरे से संबद्ध ही नहीं, एक दूसरे के पूरक भी होते हैं।

कालक्रमिक दृष्टि से इन संबंधों की गहन और सूक्ष्म विवेचना ही इस संगोष्ठी का ध्येय और लक्ष्य है।

संगोष्ठी स्थल : लक्ष्मण हावनूर प्रेक्षागृह
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, (म.प्र.)

18.07.2023	उद्घाटन, समय अपरान्ह : 03:30 बजे प्रथम सत्र (साहित्य, समाज और संस्कृति का अंतर्संबंध)
19.07.2023	द्वितीय सत्र (साहित्य और समाज : परिवेश एवं परिस्थितियाँ) तृतीय सत्र (साहित्य और संस्कृति : कालक्रम में अंतःसूत्रों की खोज)
20.07.2023	चतुर्थ सत्र (साहित्य, भाषा और समाज : परस्पर आश्रितता) समापन समारोह समयः दोपहरः 12:00 बजे

महत्वपूर्ण जानकारी :

1. ऑनलाइन पंजीकरण दिनांक 15 जुलाई, 2023 या उससे पूर्व करना अनिवार्य होगा, विस्तृत विवरण हेतु लिंक पर क्लिक करें, https://forms.gle/DAnDtFcAsSj5pToY6
2. इच्छुक प्रतिभागी अपना नाम, पता, व्यवसाय इत्यादि आवश्यक सूचना साझा करते हुए ऑनलाइन माध्यम से पंजीकृत हो सकते हैं। सम्पर्क सूत्रः 9407002437, 9302392258,7024449723
3. पंजीकरण शुल्कः संकाय सदस्यः रु. 500/- (पांच सौ रु.मात्र), शोध छात्रः 250/- (दो सौ पचास रु.मात्र)
4. शोधपत्र प्रस्तुत करने हेतु इच्छुक प्रतिभागी शोधपत्र का विषय स्पष्ट करते हुए उसे यूनिकोड फॉन्ट में टंकित करते हुए पीडीऍफ़ फाइल में गूगल फॉर्म पर भेजना सुनिश्चित करें।
5. भेजे गए शोधपत्रों का अवलोकन करने के पश्चात विषय विशेषज्ञों द्वारा उन्हें स्तर अनुसार संगोष्ठी में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया जाएगा।
6. शोधपत्र प्रस्तुतकर्ता को यात्रा व्यय देय नहीं होगा। तदनुसार विश्वविद्यालय की ओर से आवास एवं भोजन की सुविधा प्रदान की जाएगी।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक सामान्य परिचय :

भारतीय संसद द्वारा वर्ष 2007 में पारित अधिनियम के द्वारा स्थापित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश के जनजातीय बहुल क्षेत्र में अवस्थित है। लगभग 372 एकड़ में विस्तृत पादप-हरीतिमा से परिपूर्ण इस विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी हैं। ऋषि और कृषि परंपरा को धारण करने वाले विंध्य और सतपुड़ा पर्वत के संधिस्थल पर विराजमान मैकल पर्वत की उपत्यका में स्थापित यह विश्वविद्यालय केंद्र सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पूर्ण रूप से वित्तपोषित है और इसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण भारत है।

विश्वविद्यालय में वर्तमान में 4000 से अधिक छात्र - छात्राओं की संख्या है, जिन्होंने देश के कोने-कोने से आकर यहाँ प्रवेश प्राप्त किया है। विश्वविद्यालय की यही विशेषता इसके अखिल भारतीय स्वरूप का परिचायक है। पठन-पाठन की दृष्टि से परिसर में 13 संकायों के अंतर्गत आधुनिक सुविधाओं से युक्त स्मार्ट शिक्षण कक्षों के साथ 33 विभाग एवं 52 राष्ट्रीय / अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रयोगशालाएँ संचालित हैं।

पारिस्थितिकीय समस्या से निपटने के लिए विश्वविद्यालय परिसर में वर्षा जल संचय हेतु दो चेक डैम / तालाबों का निर्माण किया गया है एवं उन्हें एक विशाल नहर के माध्यम से जोड़ दिया गया है। उक्त तालाबों में लाखों लीटर पानी को सुरक्षित रखने की क्षमता है।

इस क्षेत्र की जैविक विविधता को इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय द्वारा पुनर्जीवित करने का कार्य निरंतर किया जा रहा है। जनजातीय शब्द की सार्थकता को साकार करते हुए विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा शिक्षा और शोध के माध्यम से न केवल जनजातीय भाषा, साहित्य, समाज, संस्कृति, रीति- रिवाज और खानपान को संजोने का कार्य किया जा रहा है, अपितु लुप्तप्राय दुर्लभ वनस्पतियों और औषधीय गुणों वाले पौधों को भी उच्च शिक्षा में अध्ययन और शोध का विषय बना कर महत्वपूर्ण और जनोपयोगी निष्कर्ष निकाले जा रहे हैं। इस दृष्टि से विभिन्न विभागों, लुप्तप्राय भाषा केंद्र, डॉ.आंबेडकर चेयर, नवाचार क्लब और एम. एस.एम.ई. द्वारा वित्तपोषित आजीविका प्रशिक्षण केंद्र के अंतर्गत आयोजित कार्यशालाओं में आर्थिक स्वावलंबन और रोजगार सृजन की संभावनाओं की तलाश जनजातीय समाज को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में विश्वविद्यालय की एक अनूठी पहल है।

विश्वविद्यालय तक पहुँचने के माध्यम :

ट्रेन मार्ग : समीपस्थ रेलवे स्टेशन पेंड्रा रोड, वहाँ से इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय परिसर के लिए सड़क मार्ग (22 कि.मी.)

हवाई मार्ग : समीपस्थ हवाई अड्डा जबलपुर, वहाँ से इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय परिसर के लिए सड़क मार्ग (220 कि.मी.) एवं रायपुर हवाई अड्डा (260 कि.मी.)

AMARKANTAK (M.P.)
विद्यया विन्दते अखिलम्

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, (म.प्र.)

तथा

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ,(उ.प्र.)

के संयुक्त तत्वावधान में

साहित्य, समाज और संस्कृति

विषय पर तीन दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक : 18, 19 तथा 20 जुलाई 2023

संरक्षक

प्रो.श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी

माननीय कुलपति

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक,(म.प्र.)

विद्यया विन्दतेऽखिलम्

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकटंक, (म.प्र.)

श्री आर.पी.सिंह

आई ए एस

निदेशक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, (उ.प्र.)

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, (उ.प्र.)

संयोजक

प्रो. रेनू सिंह

अध्यक्ष, हिंदी विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, (म.प्र.)

संयोजक

डॉ.अमिता दुबे

प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान,
लखनऊ, (उ.प्र)

सह-संयोजक

डॉ. अर्चना श्रीवास्तव

हिंदी अधिकारी, राजभाषा प्रकोष्ठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, (म.प्र.)

आयोजन समिति

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, (म.प्र.)

डॉ.प्रवीण कुमार

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, (म.प्र.)

डॉ. वीरेंद्र प्रताप

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, (म.प्र.)

डॉ. पूनम पाण्डेय

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, (म.प्र.)